हंसी-ठहाकों का सिलसिला

'जात ही पूछो साधु की'-लीला आर्ट्स के बैनर में ओशो वर्ल्ड फाउंडेशन की यह दूसरी प्रस्तुति 17 और 18 सितंबर को नई दिल्ली के इंडिया हैबिटाट सेंटर में पेश की गई। विजय तेंदुलकर द्वारा लिखित और संजीव जौहरी के निर्देशन में सम्पन्न इस नाटक की कहानी महिपत बब्रु वाहन के इर्द-गिर्द घूमती है। वह अपने नाम के आगे प्रोफेसर लगा देखना चाहता है। प्रोफेसर बनने का उसका स्वप्न पूरा तो होता है। लेकिन यहां तक पहुंचने में उसे जिन-जिन कठिनाइयों को झेलना पड़ा, उसका बेहद रोचक चित्रण नाटक में देखने को मिला।

ओशो के प्रवचन से संध्या का आरंभ किया गया। और फिर शुरु हुआ हंसी-ठहाकों का सिलसिला। एम. ए. पास कर उसे एक ग्रामीण इलाके में प्रोफेसर की नौकरी मिल जाती है। जहां उसका सामना मनचले, उपद्रवी और पढ़ाई से विमुख छात्रों से होता है। स्वार्थवश उसी के डिपार्टमेंट में लेक्चरर बनकर आयी देहाती संस्कारों वाली नलिनी से प्रेम का चक्कर भी चलाता है। लेकिन अंततः वह अपनी प्रेमिका और नौकरी दोनों को गंवा देता है। चाहे महिपत के प्रोफेसर बनने के मार्ग में आने वाली कठिनाइयां हों, या प्रोफेसर बनने के बाद की जटिल परिस्थितियां, नलिनी के साथ उसका प्रेम प्रसंग हो या जात के नाम पर आने वाले प्रश्न, स्थिति चाहे जो भी हो, हास-परिहास का तालमेल उनमें संयुक्त रूप से विद्यमान रहा। कलाकारों के अभिनय को सभी ने खूब सराहा।

दि हिन्दू, दि टाइम्स ऑफ इंडिया, हिन्दुस्तान टाइम्स, एशियन एज, इकनॉमिक टाइम्स, दैनिक जागरण, जनसत्ता सहित अनेकों समाचार पत्रों ने नाटक की पूर्व सूचना और संबंधित समाचार को प्रमुखता के साथ छापा।